पाठ–15
अगर इन्सान ही हूँ

मूल पाठ :–

तो फिर आप ही बताइए
अगर मेढक नहीं हूँ
तो कैसे रह रहा हूँ कुएँ में?

अगर चूहा नहीं हूँ
तो यह बिल किसका है?

अगर कुत्ते से बेहतर हूँ
तो यह दुम किसकी हिल रही?

कवि कुँवर नारायण 'अगर इन्सान ही हूँ' कविता में इन्सान के अन्दर से समाप्त होती इन्सानियत पर प्रश्न खड़ा करते हैं। उनके प्रश्न हमारी संवेदना को झकझोर देते हैं। कवि कहते हैं कि मेढक कुएँ में रहता है अर्थात् उसकी दुनिया कुएँ तक ही है। इन्सान भी मेढक की तरह हो गया है, उसे केवल अपनी बनायी दुनिया से मतलब है। वह अपने आस–पास के लोगों के सुख–दुख में साथ नहीं होना चाहता है। आज का इन्सान सीमित दायरे में जीवन जीना चाहता है। वह दूसरों की मदद करना या दुख–दर्द में साथ देना नहीं चाहता है। आज का इन्सान स्वार्थी हो गया है। आगे कवि इन्सान की तुलना चूहे से करते हैं। वे कहते हैं कि यदि इन्सान चूहे जैसा नहीं है तो डर कर बिल में क्यों रह रहा हैं? इन्सान इतना सुविधा भोगी हो गया है कि अपने बनाये बिल से बाहर निकलकर दुनिया को

नहीं देख रहा है। आगे कवि कहते हैं कि इन्सान यदि कुत्ते से अच्छा है तो क्यों वह अपने फायदे के लिए कुत्ते की तरह अपनी पूँछ हिलाता है। अर्थात् इन्सान अपने फायदे के लिए दूसरों की चापलूसी करता है, उसके आगे–पीछे घूमता है। इन्सान के अन्दर से उसकी सच्चाई, ईमानदारी खत्म हो गई है, इसलिए वह अपनी बनाई झूठी दुनिया में जीने लगा है।

अगर चमगादड़ नहीं हूँ

तो उलटा कौन लटका है सदियों से

अंधेरे खंडहरों में?

अगर दीमक नहीं हूँ

तो कौन चाट गया ईमान की फाइलें?

अगर मच्छर नहीं हूँ

तो कौन पी रहा है देश का खून?

कवि कुँवर नारायण मानव के नैतिक मूल्यों में आयी गिरावट पर आश्चर्य व्यक्त करते हैं। जिस प्रकार चमगादड़ चिड़िया के समान उड़ तो सकता है परंतु रहने के लिए अंधेरे उजड़े हुए भवन के हिस्से में रहता है। वैसे ही इन्सान सच्चाई, ईमानदारी, प्रेम, विनम्रता के बल पर एक कुशल संसार का निर्माण कर सकता है परंतु लोभ, लालच, बेईमानी में पड़कर अंधेरे में स्वार्थी जीवन जी रहा है। अर्थात् इंसान का अस्तित्व संकट में है। आज ईमानदारी दम तोड़ रही है। ईमानदारी के दस्तावेजों को दीमक खा चुका है। आज सच्चाई कहीं नजर नहीं आती, चारों ओर बेईमानी, घूसखोरी, लूटखसोट, भ्रष्टाचार का बोल–बाला है। कवि इन्सान की तुलना मच्छर से करते हैं। कवि कहते हैं कि यदि इन्सान मच्छर जैसा नहीं है तो वह क्यों देश के गरीब इन्सानों का खून पी रहा है। इन्सान ही इन्सान का खून पी रहा है। चारों तरफ अमीरों का अधिकार है, पैसे

के बल पर कुछ भी हासिल कर लेते हैं। इन अमीर लोगों के पास इतने साधन हैं कि गरीबों को मच्छर की तरह मसल देते हैं। शोषण की चक्की में आम–आदमी पिसने को मजबूर है।

सच बताइए

अगर इन्सान ही हूँ

तो इतनी अपमानित क्यों है

इतनी बड़ी सचाई?

कवि इन्सान से उसकी सच्चाइयों पर प्रश्न खड़ा करते हैं। आज इन्सान होन की परिभाषा बदल गई है। आज इन्सान होने के लिए बेईमान होना होगा। हमारा समाज ही ऐसा बन गया है जिसमें सत्य के रास्ते पर चलने वाला इन्सान अकेला रह जा रहा है। लोग सच्चे ईमानदार आदमी को पागल समझ रहे हैं। आज हर इन्सान अपना मतलब साधने में लगा हुआ है। कवि ने छोटे–छोटे जीव–जन्तुओं से इन्सान की तुलना करके आज के इन्सान पर व्यंग्य किया है। आज सच बोलने वाले इन्सान को अपमानित किया जा रहा है। उसका मजाक उड़ाया जा रहा है। आज के भौतिकवादी इन्सान की ऐसी सच्चाई को देखकर हर इन्सान को शर्म आनी चाहिए परंतु ऐसा नहीं है। इन्सान, इन्सान होने का दंभ भरते हैं परंतु इन्सान की सच्चाई देखकर हमें अपने इन्सान होने पर शर्म आनी चाहिए।

कुँवर नारायण